महात्माओं के संदेशों।

ब्ह्मर्षि तटवर्ती वीर राघवराव

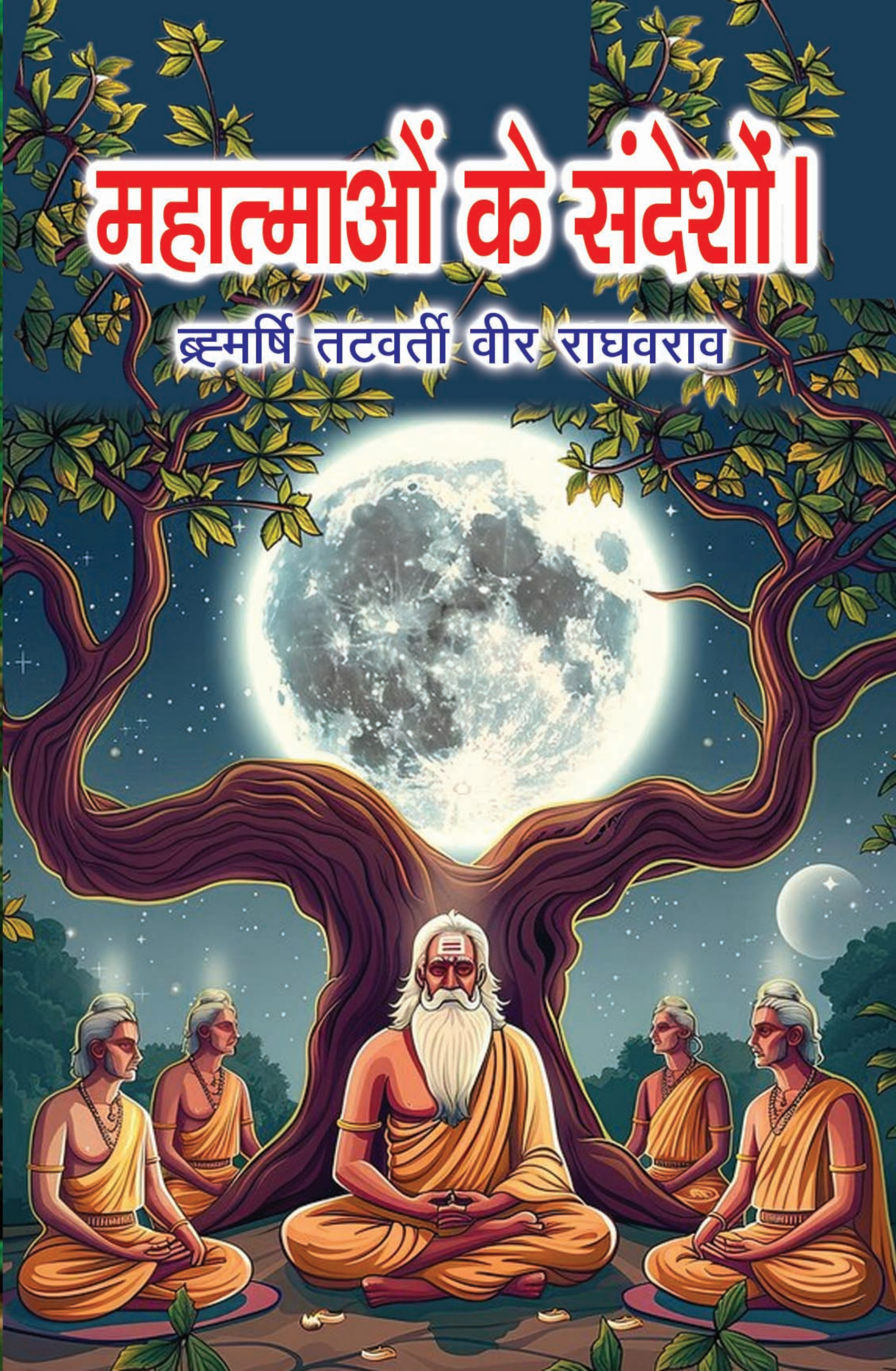

महात्माओं के संदेशों।

लेखक : श्री तटवर्ती वीर राघवराव

हिन्दी अनुवादः श्रीमति तूनुगुंट्ला राज्य लक्ष्मी

For Books Please Contact :
TATAVARTHY VEERA RAGHAVARAO
Tatavarthivari Street, BHIMAVARAM-534201.
W.G.Dist., A.P. Ph: 94403 09812

Rs.50/-

सूची

1. महात्माओं के संदेशों। 3

2. तीन प्रकार की जिंदगियां है। 8

3. गुणों से ही कर्म बनते हैं। 16

4. आत्मज्ञानी का चाल चलन कैसे होती है। 39

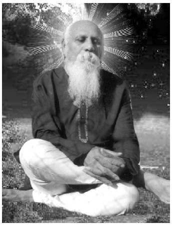

ध्यान की विधि सांस पर ध्यान

जिस किसी को जो कोई आरामदायक आसान हो उसमें आराम से बैठकर... दोनों हाथों को जोड़कर... दोनों आंखों को बंद करके... प्राकृतिक रूप से होने वाला सांस लेना और छोड़ने की प्रक्रिया का अवलोकन करना चाहिए!

बीच-बीच में अनेकानेक सोच मन में आते हैं उन्हें वहीं के वहीं कटौती करके... फिर से बार-बार सांस पर ही ध्यान ले जाते रहना चाहिए... धीरे-धीरे निर्विचार की स्थिति मिलती है.... चित्त वृत्तों का निरोध होगा... मन निर्विषय, शून्य हो जाएगा। मन को शांति मिलेगा। यही ध्यान की अवस्था है।

इस निर्विचार अवस्था में होने वाले अनेकानेक शारीरिक, नाड़ी मंडल, आत्मा अनुभवों का अवलोकन करना चाहिए। इस स्थिति में ब्र्मांडीय प्राण शक्ति अत्यधिक मात्रा से शरीर में प्रवेश करके नाड़ी मंडल को शुद्ध करता है। उस ऊर्जा के कारण बीमारियां कम हो जाते हैं। नाड़ी मंडल शुद्ध होने के कारण कर्मो का नाश होते हैं।

हर दिन अपने उम्र के हिसाब से... जितना उम्र हो कम से कम उतने मिनट... जरूर... दिन में दो बार... ध्यान करना चाहिए।

महात्माओं के संदेशों।

सभी योगियों ने बहुत मेहनत किया। ज्यादा गौर से साधना किया, सत्य को जान लिया, मनुष्य के दुख के बारे में, दुख के कारण जान लिया, दुख से बाहर निकलने का रास्ता जान लिया और वही सब को सिखाया।

उनके बोधों का सार ग्रहण करके अगर आचरण मे ला सकते हैं, तब कोई भी दुख आसानी से निकल जाएगा। कई सारे समस्याओं के वजह से ही दुख मिलता है।

1. खास करके किसी को भी देखो स्वास्थ की समस्याएं हैं।

2. असहनीय आर्थिक समस्याएं हैं।

3. पारिवारिक समस्याएं हैं।

4. सांसारिक समस्याओं, मतलब पति पत्नी के बीच होने वाली समस्याएं हैं।

5. आस पड़ोस वालों के साथ समस्याओं हैं।

6. बुढ़ापे की समस्याओं, माने, बुढ़ापे में आने वाली समस्याएं हैं।

7. किसी को ना जानने वाली और एक समस्या क्या है? कि मरने के बाद की जीवन वाले समस्याएं हैं।

हर एक मनुष्य को इतनी प्रकार के समस्याएं हैं। किसी को समस्या होने से सहनना मुश्किल होता है। समस्या गहरी होने से आत्मा हत्या करने को भी आगे पीछे नहीं सोचते हैं।

इतनी समस्याओं मैं डूबने वाले इंसान को बाहर लाने के लिए योगियों ने अपने जीवन को त्याग किया। मनुष्य कैसे जीने से समस्याओं में से बाहर आकर, खुशी से जी सकते हैं, उन्होंने कई बातों इंसान को सिखाया।

ऐसे उन्होंने जो अनुभव प्राप्त किया हुआ ज्ञान, हम सबको बताया। ऐसी बताई गई बातें को इतनी आसानी से छोड़ने लायक नहीं है और छोड़ना भी नहीं चाहिए। उन्होंने कहा है कि ‘तुम इस दुनिया को छोड़ कर जाने के समय

में, यह धन तुम्हें थोड़ा भी उपयोग में नहीं आएगा, माने यह धन निस्प्रयोगी है, ऐसे ही यह धन भगवान को पास में ना ला सकेगा'। 'धन दौलत भगवान को पाने के मार्ग में अवरोध है'।

एक बार सोचिए की इस आध्यात्मिक मार्ग में महात्माओं धन के बारे में कितना बताया। उन्होंने कहा कि धन निस्प्रयोगी है, ऊपर से यह मार्ग में धन अवरोध है।

अब हम सब आध्यात्मिक मार्ग में आगे बढ़ने के लिए कोशिश कर रहे हैं, मतलब दुख को दूर करने का कोशिश करते हैं। तो दुख दूर होने के लिए सब समस्याओं से बाहर निकलना चाहिए। जब तक समस्याओं से बाहर नहीं आएंगे तब तक दुख दूर नहीं होगा।

महान लोगों को किसी को भी देखो, उन्होंने यह मार्ग में आने के बाद धन को छोड़ दिया, यह कमाई पर नजर नहीं रखते हैं। उनको पता है कि अचानक छोड़ने से कुछ समस्याओं और रुकावटों को सामना करना पड़ता है, तो भी परवाह नहीं करते हैं। ऐसे ही पत्री जी को गौर से देखने से, उन्होंने अपनी नौकरी का इस्तीफा दिया। उनकी पगार उनकी जीवन का सहारा था, फिर भी उन्होंने परवाह नहीं किया है।

धन नमक चीज़ इस रास्ते का अवरोध है, आटंक है, रुकावट है, यह बात जान गया। पत्री जी का परिचय के बाद मैंने जाना कि मैं एक आत्मा हूँ। मुझे ज्ञान चाहिए। ज्ञान कमाने के लिए धन अवरोध है और रुकावट है। यह बात मैंने समझ गया। इसलिए मैंने सारे बिजनेस छोड़ दिया।

अगर मैं व्यापार करूं तो पूरा समय कमाने के लिए ही निकालना पड़ता है। मैं सबेरे 8:00 बजे से लेकर रात को 10:00, 11:00 बजे तक, तरह तरह की बिजनेस करता था । कहीं भी खाली नहीं बैठा था। माने फुर्सत मिलता ही नहीं, अगर धन पर ध्यान रखने से ज्ञान कहां से पाओगे ? इसलिए मैंने इसे फायदा नहीं है सोचकर सभी बिजनेस बंद कर दिया। मेरे राय है कि एक घंटा

कमाई पर नजर रखें तो एक घंटे का ज्ञान आज करने में रुकावट आएगा।

वही तक की मैंने 53 साल बर्बाद किया, और क्यों बर्बाद करूं ? मेरे पास ज़रूरत से भी ज्यादा धन है, इसलिए तुरंत सभी बिजनेस छोड़ दिया।

ये ही नहीं परिवार के लिए बहुत समय निकालता हूं, इसलिए बच्चों को बाहर भेज दिया। सभी पदों छोड़ दिया, सारे दोस्तों और रिश्तेदारों के समारोह में और पार्टियों में जाना छोड़ दिया है। यह सब मेरे ज्ञानार्जन में अवरोध है।

ऐसे करने से मेरा पूरा समय 100 प्रतिशत ज्ञान अर्जन के लिए इस्तेमाल करने में मौका मिलता था। नहीं तो शायद मैं इस स्थाई तक ना पहुंच पाता। पत्री जी एक संदर्भ में कहा था कि तुम जिसमें चैंपियन बनना चाहते हो, उस पर नज़र रखो। उन्होंने भी वही काम किया। तो मैंने 20 साल से ही वही काम करने से क्यों नहीं आगे बढ़ूंगा ? कोई भी आगे बढ़ेगा।

बहुत लोग क्या कहते हैं? कि हम वह करते हैं, यह करते हैं, ऐसे बोलते हैं। हम अपने सांसारिक परिवार को संभालते हुए, कमाते हुए, पदों को संभालते हुए इस मार्ग में हैं।

हो सकते हैं सबको अपनी-अपनी इच्छा है, कोई किसी की गलती नहीं है। ज्ञान प्राप्त के ऊपर तुम दस प्रतिशत नजर रखने से तुम्हें 10 प्रतिशत ज्ञान, 50 प्रतिशत नजर रखने से 50%, और 90 प्रतिशत नजर रखने से 90 प्रतिशत मिलेगा। इसलिए हमें पहले तय करना चाहिए।

दरअसल में पहले हमें जानना है कि हम कौन हैं? हमें क्या चाहिए? क्या हमें उपयोगी है? क्या हमें फायदेमंद है?

यही नहीं हमें जानना है कि इस लोक में क्या फायदेमंद है और परलोक में क्या फायदामंद है। इस लोक में, परलोक में भी फायदामंद ज्ञान ही है। लेकिन धन यही लोक में ही उपयोग है। पर लोक में उपयोगी नहीं।

साधारणतः दरअसल में इस पृथ्वी को इहलोक बोलते हैं, जो दिखाई नहीं देते उन लोकों को परम लोक समझते हैं। लेकिन हम आत्माएं हैं, हम

जिनको परम बोलते हैं वह हमारे लोक है। वैसे ही सभी जो परम बोलते हैं! वही इहम है। अर्थात जिसको इहम समझते हैं, वही हमारे परम है। यह बात हमें जानना चाहिए।

टीकः हम सब भारत देश में रहने वाले हैं ना? यानी भारत देश हमारी स्वदेश है। अमेरिका हमें परदेश है। इस स्वदेश से अमेरिका, माने परदेश क्यों जाते हैं?

वहां जाकर नौकरी करके, बिजनेस करके, पैसा ज्यादा कमाने के लिए। कमाने के बाद क्या करते हैं? स्वदेश में आकर खेत खरीदते हैं, घर बनाते हैं, अच्छा बिजनेस करेंगे या व्यवसाय करेंगे, अच्छी तरह से सेटिल हो जाएंगे।

कुछ लोग ऑस्ट्रेलिया जाते हैं। कुछ लोग लंडन जाते हैं और कुछ लोग दुबाई जाते हैं, सब अपनी-अपनी पसंद की जगह जाते हैं। कुछ भी हो पर देश में कमाकर आने के लिए जाते हैं। स्वदेश में महान बनने के लिए जाते हैं।

वैसा ही आत्मा रूपी हम, हमारा जो स्व लोक हैं, उस पर लोक से, इस पृथ्वी पर आए हैं, अब पृथ्वी हमारी पर लोक है।

इसलिए यह समझेंगे तो? आपको समझ आएगा कि आप सब ध्यान मार्ग में क्यों आते हैं। दरअसल में आपको देखकर सब समझते हैं कि आप पागल है, लेकिन जो आपको पागल समझते हैं वही पागल है।

आत्म रूपों, आपने इस पृथ्वी पर आया। आकर यहां सभी के लिए रहेंगे क्या?   नहीं रहेंगे, कुछ दिन रहेंगे । तो आया किसलिए? अर्थात ज्ञान कमाने के लिए।

इसलिए आत्मा रूपी, हमने हमारी स्व लोक समझने वाली परम लोक से ज्ञान अर्जन के लिए आए हैं । फिर परलोक में जाएंगे, तब उस ज्ञान से और भी उत्तम लोक में पहुंचेंगे।

देखिए धन अर्जन के लिए तबीयत अच्छा हो या ना हो, ताकत हो या ना हो जाकर कमाते हैं। वैसे ही ज्ञान भी तबीयत अच्छा हो ना हो, ताकत हो

ना हो ज्ञान अर्जन करना चाहिए। ऐसे ही जो अमेरिका जाते हैं वे सभी वापस आने के समय में, वहां सब कुछ छोड़कर आते हैं।

ऐसा ही इस पृथ्वी को हमें समझना है कि यह परलोक है, यहां जो है सब छोड़ने के लिए दुखी नहीं होना चाहिए। अगर कोई भी मर भी जाए हमें दुखी नहीं होना चाहिए।

हमारी मैडम की माता जी का उम्र 90 साल। उनके भाई लोग फोन किया कि माताजी गुज़र गई, बहन तुम खरगपुर आ जाओ, तो मेरी मैडम ने कहा कि अब मैं आने से भी वहां तक पहुंचते पहुंचते उसको ले जाएंगे, आकर क्या करूं? मैडम ने कहा कि तीन दिवसीय क्लास खत्म होने के बाद, आऊंगी। और उनसे क्या कहा? कि इतने उम्र आने के बाद माताजी क्यूं नहीं जाएगी? जरूर जाएंगे। आप लोग दुखी नहीं होना, चिंता नहीं करना। ज्ञान माने यही है।

भागवत गीता में बताया कि श्लोक

श्लोक **अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे ।**

गतासूनगतासुंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः (भ.गी. 2 - 11)

भगवान श्री कृष्ण जी ने कहा है न ? कि जो गुजर गया, और जो गुजर जाने वाला हो, उसके बारे में जो भी दुखी नहीं होता वही ज्ञानी है, अर्थात ज्ञान में पूरा डूब गया है।

ऐसे ही पिता जाएं, माता जाएं, पति जाएं, पत्नी जाएं, बच्चे जाएं, लेकिन साधारण बात है कि थोड़ी देर के लिए दुखी होना, सहज है। लेकिन सदा के लिए रोते रहना, यह मूर्खों का काम है। मूर्खता और अज्ञान है यह बात पत्री जी ने कहा है।

इसलिए धन ही नहीं सब कुछ छोड़ना ही है। कुछ भी साथ में नहीं आएगा। हमें मालूम करना चाहिए, कि आत्मा रूपी हमें किसी से कोई नाता नहीं है।

हमने परम में किसी एक लोक में से आकर, माता में बनने वाली शिशु में प्रवेश किया। थोड़ा समय के लिए यहां मिला। फिर सब अपने-अपने रास्ते चले जाएंगे।

तीन प्रकार की जिंदगियां है।

महात्माओं ने क्या कहा, की मनुष्यों को तीन प्रकार के जिंदगियां है।

1. रात की जिंदगी ।, 2. संध्या जिंदगी ।, 3. दिन की जिंदगी ।

ऐसे मनुष्य जीवन को, और जीने का तीन प्रकार से विभाजित किया।

यहां देखें कि रात की जिंदगी और दिन की जिंदगी के बीच में होने वाले समय को संध्या कि जिंदगी कहते हैं। एक रात की संध्या और दूसरा दिन की संध्या।

1. रात की जिंदगी।

अर्थात पूरा का पूरा अज्ञान में होने वाला जिंदगी। उन लोगों को कुछ भी मालूम नहीं है, क्या कर रहे हैं अभी मालूम नहीं है, क्या करना है यह भी मालूम नहीं है, क्या बोलते हैं यह भी मालूम नहीं है, क्या नहीं बोलना है यह भी मालूम नहीं है, ऐसे ही क्या सोचते हैं मालूम नहीं है, क्या सोचना है यह भी मालूम नहीं है।

सभी बातों में पूरा प्रतिकूल में जीते हैं, जो ना करना है वह काम करते हैं, जो ना बोलना है वह बातें बोलते हैं, जो नहीं सोचना है सोचते हैं, ऐसे करने में, फलस्वस्र्प, मुसीबतें लाते हैं। समस्याएं आते हैं, गहरी दुख में डूब जाते हैं। महात्माओं ने उनके बारे में कहा कि वह आंखों के अंधे हैं, मतलब उनको आंखों होने से भी अंधों के बराबर है।

इनको जिंदगी में कुछ भी सुख चैन नहीं है। क्योंकि वह जो करना है करने से सुख मिलेगा, शांति मिलेगा। इसके विपरीत करने से सुख कहां से आएगा? शांति कहां होती ? उनको सृष्टि के नियम मालूम नहीं है, सृष्टि के जो धर्म है, बे भी पता नहीं, सृष्टि के जो सिद्धांत है वह भी पता नहीं। सृष्टि में वे सब है करके भी मालूम नहीं है।

हमेशा समझते हैं कि मुझे जो मालूम है वही सही है, मैं जो करता हूँ वही सही है, दूसरे लोग बताने से भी नहीं सुनेगा। और कहते मेरे से भी तुम्हें ज्यादा मालूम है क्या? बड़े और बुजुर्ग और महापुरुषों के संदेश नहीं सुनते हैं, नहीं समझते, नहीं आचरण में लाते हैं। इनका प्रवर्तन बहुत मूर्खता पूर्वक होता है। कहते हैं कि जिस खरगोश को पकड़ा उसको तीन ही पैर है। लोगों में बदलाव आने की बहुत जन्मों लेना पड़ता है।

2. संध्या जिंदगी :- यह दो प्रकार के हैं।

a) दिन की संध्या:- रात गुजर जाने के बाद दिन आ रहा है उस संध्या को दिन की संध्या माना जाता है।

b) रात की संध्या:- दिन गुजरने के बाद फिर अंधेरा होने के समय होती है, उसे रात की संध्या माना जाता है ।

मनुष्य अज्ञानता में कुछ जन्मों गुजर जाने के बाद थोड़ा सा ज्ञान प्राप्त करने का प्रयत्न करते हैं। उसको पाने के लिए साधना, स्वाध्याय और सांगत्य करते हैं। गुरुओं के पास थोड़ा ज्ञान भी सीखते हैं। इन लोगों का दिलचस्पी होगी लेकिन श्रद्धा नहीं होती। यह लोग कोई आध्यात्मिक कार्यक्रम जाना चाहते हैं लेकिन जा नहीं पाएंगे, कोई ना कोई रुकावट आती है।

बच्चें, परिवार समस्याएं, ऐसे कई होते हैं। क्या करेंगे? सभी करना चाहते हैं, लेकिन कुछ भी नहीं करते हैं। जाने मालूम नहीं है क्या? सब मालूम है, लेकिन आचरण में नहीं लाते। खाली सोचते हैं कि हमें यह सब करना है और जाना है। सोचने में ही समय खर्च कर लेता है। खुद देखेंगे तो आप किस स्थाई में हैं आपको समझ आता है।

महान लोग हमें ऐसे वैसे नहीं बताते हैं, उन्होंने हम सबको छान लिया है। संध्या की जिंदगी रहने वालों का जीवन कैसी होती है? अर्थात ज्ञान के बारे में मालूम करते हैं लेकिन आचरण में नहीं लाता।

1. तुम कौन हो? पूछने से वे जवाब देते हैं कि मैं आत्मा हूँ। लेकिन आत्मा जैसे बिताने वाले वैसे जीवन नहीं होते, ऐसे नहीं बिताते हैं। तुम घर जाने के वैसे रहते हो? पूछने पर 'नहीं' बोलते हैं। अर्थात संध्या की जिंदगी में हैं। वैसा ही, है जो सुना है उसे आचरण मे लाने से वह दिन की जिंदगी है। सुनने के बाद जानने के बाद भी आचरण में नहीं लाने से, संध्या की जिंदगी है। सुनने पर उसको समझ नहीं आया है, वह रात की जिंदगी है।

2. मूर्ति पूजा नहीं करना है, कहने पर वे 'हां' कहते हैं, लेकिन मूर्ति पूजा करते हैं। मूर्ति देखते ही दूर में रहने वाले उनको दोनों हाथ पास में आ जाते हैं। लेकिन मूर्ति भगवान है क्या? पूछने पर वह 'नहीं है' कहते हैं। भगवान कौन है? सवाल करने पर वह 'आत्मा' बोलते हैं। इनकी संध्या की जिंदगी है। अर्थात संध्या जीवन है।

3.ध्यान का मतलब क्या है? पूछने पर वह बोर्ड पर लिखते हैं कि 'श्वास पर ध्यास' है । लेकिन वह संगीत पर ध्यास, ध्यान, गाइडिंग ध्यान साधना करते हैं, यह लोगों संध्या की जिंदगी में है।

4.सवेरे उठना चाहते हैं लेकिन उठ्ते नहीं है।

5.भीमावरम आना चाहते हैं लेकिन नहीं आ पाते हैं। कुछ लोग कहते हैं कि हम 6 साल से आना चाहते हैं, लेकिन किसी वजह से आ नहीं पाते हैं।

6. जूम क्लास में वीडियो में आना चाहते हैं लेकिन वीडियो खोलेंगे नहीं।

7. गुरूजी से बात करना चाहते हैं लेकिन बात नहीं कर पाते।

8. अच्छी तरह ध्यान करना चाहते हैं लेकिन नहीं कर पाते ।

9. किताबें पढ़ना चाहते हैं लेकिन पढ़ नहीं पाते। ऐसे लोग संध्या जीवन की जिंदगी मे ही है समझो ।

इस संध्या जिंदगी में रहने वाले रस्सी को देखकर सांप समझते हैं।

अंधेरे में जाने के रास्ते में एक रस्सी पड़ी है, पूरा उजाला भी नहीं पूरा अंधेरा भी नहीं, और रस्सी गोल घूमि पड़ीं है। उनको संदेह आता है कि वह रस्सी है? या सांप? हिलती नहीं है लेकिन सांप जैसा ही है। गलती से पास में जाएंगे तो हिलेगी तो, ऐसे संदेह मे रहते है। ऐसे लोगों की जिंदगी संध्या की जिंदगी है।

गर्मियों के दिनों में मृग तृष्णा को देखकर वो समझते हैं कि वहां पानी है। पास में जाने के बाद भी उसको समझ नहीं आता। ऐसे लोगों की जिंदगी संध्या जिंदगी। उनको मालूम नहीं है क्या? मालूम है, लेकिन आचरण करेंग क्या? नहीं करते हैं।

अज्ञानता से ज्ञान में आना ही, संध्या की ज़िंदगी है।

3. दिन की जिंदगी :-

यह पूरा ज्ञान प्राप्त किया गया जिंदगी है, इनकी जिंदगी दिन की जिंदगी। पूरी तरह से ज्ञानी बनते हैं, वे जो अच्छे काम करना है सब कुछ करते हैं, जो अच्छी बातें कहना है सब कहते हैं, जो अच्छा सोचना है अच्छा सा सोचते हैं, ठीक ढंग से जीवन बिताते हैं।

इनकी जिंदगी पूरा का पूरा इस केलिए लाभदायक है, इनके ज्ञान सविस्तार से बढ़ने के कारण वह आपने कर्म को भस्म कर लेते हैं। जब कर्म ही नहीं तब मोक्ष को भी पा लेते हैं। अब हमारे सब लोग इस स्थाई तक पहुंच चुके हैं ।

इन तीन तरह के लोगों के बारे में पत्री जी ने क्या कहा? कि अज्ञानी का मतलब है रात की जिंदगी में रहते हैं, अल्प अज्ञानी का मतलब है संध्या की जिंदगी में रहने वाला, ज्ञानी का मतलब दिन की जिंदगी में रहने वाला। यहां पत्री जी ने ऐसे बताया कि कुछ लोग पूरा अज्ञान में रहने वाले हैं, कुछ लोग थोड़ा अज्ञान से बाहर निकलकर थोड़ा सा ज्ञान प्राप्त करने वाले, और तीसरा, पूरा ज्ञान प्राप्त करने वाले हैं।

क्योंकि? हम सब ज्ञान के मार्ग में हैं। हर एक तरह तरह के चरणों में हैं, पक्का सबके सब आगे बढ़ जाते हैं, लेकिन उनकी श्रद्धा के अनुसार होती है। आसानी से एक ही बार में पूरा कैसे आएगी? इसके लिए मेहनत करना है, अधिक परिश्रम करना है।

पत्री जी ने कहा है कि अज्ञान को छोड़कर ज्ञान पाना है, तो तीन प्रकार के आध्यात्मिक त्रिरत्नों के मार्ग है ।

1.साधना।, 2.स्वाध्याय।, 3.सांगत्य ।

इन तीनों को पकड़कर पृथ्वी को छोड़कर जाने के पहले ही ज्ञान को प्राप्त कर लेना चाहिए।

संसार में तरह-तरह के गुण वाले रहते हैं, उनकी गुणवत्ता के अनुसार उनकी चाल-चलन होती है। सबके गुण एक तरह नहीं होते। इसलिए सब के चाल-चलन भी एक जैसा नहीं होता है। गुणों के कारण यह अंतर जरूरी है।

उनके चाल-चलन से वह किस गुण में हैं कह सकते हैं। आपके चाल-चलन को गौर से देखने से आपका गुण समझ आता है। इसी के अनुसार अपने आप को सुधार सकते हैं। अगर गुणवत्ता में बदला आना है तो गहरी ध्यान अध्ययन करना चाहिए, शक्ति को विस्तार से बढ़ाना चाहिए, खानपान के व्यवहार सख्त पालन करना चाहिए।

इस तरह करते समय आप जाने बिना ही आपकी ताकत बढ़ते जाती है, आपकी ताकत बढ़ते बढ़ते आपका मन शुद्ध हो जाता है, आपका मन शुद्ध होते होते आपका गुण बदल जाता है, बदलते बदलते इंसान का चाल-चलन बदल जाता है, काम में परिवर्तन आता है, बातों में परिवर्तन आती है और सोचने का ढंग मैं भी परिवर्तन आता है।

ऐसे बदलाव से राक्षस इंसान बन जाता है, मनुष्य महान बनता है, अंत में महात्मा परमात्मा बनता है। चाहे वह स्त्री या पुरुष हो।

जब तक ऐसे बदलाव नहीं आएगा तब तक आपने जो अभ्यास किया,

आपने जो मुश्किलें उठाया, आपने जो परिश्रम किया, आपने जो धन खर्च किया, वे सब बेकार है! इस ध्यान मार्ग में आप आया अर्थात बदलाव आएगा ही। अगर आप ऐसे बदलाव लाएंगे तब इस लोक में और ऊपर लोक में भी आपका भविष्य महान होगा, और, बदलना भी चाहिए।

आपका साधना उसी तरह चलता है तो आपके काम दुनिया में रहने वालों के लिए आश्चर्यचकित हो जाता है। वह आश्चर्यचकित होते हैं कि क्या ऐसा कैसे बदल गया, आश्चर्यचकित होना भी है। बाहर वाले ही नहीं आपके घर के लोग भी आश्चर्यचकित हो जाएंगे। ऐसे बदलाव इन क्लास में भाग लेने वालों में देख सकते हैं।

आरमूर जानाभाई मैडम ने कहा कि मैंने पूरा रात ध्यान किया। मेरी नजर हमेशा सभी को अच्छा होना है। मैडम की तरह सभी को करना चाहिए, मेरी कोशिश है कि सभी लोग आगे बढ़ना है, अगर सब बदल जाएंगे तो दुनिया कितना बदल जाएगी? यही पत्री जी का अरमान था मेरा भी यही अरमान था!

आज कल की हालात देखकर अपने आप को कम समझने की अंदाजा नहीं करना चाहिए, हर एक महान है। एक बार वैजाग में ट्रेकिंग रखा गया था। उसने जहां चाहे वहां लेट जाते थे, एक चींटी तक भी नहीं काटती, एक मच्छर भी नहीं काटती, सांप भी नहीं डसती थी। तब मैंने समझा कि पत्री जी का वाइब्रेशन और उनका आरा का ताकत ऐसी है।

बातों-बातों में ऐसे अवसर पर बात आया कि कौन महान है। मैंने समझा कि ज्यादा पैसे वाला महान है, जो सत्ता में रहता है वह महान है, जो ऊंचे पद पर रहेगा वह महान है, ऐसे अधिकारी महान है ऐसे सोचता था। भीख मांगने वाला निम्न है, चोरी करने वाला, गरीब बहुत निम्न है, सोच में रहता था। यही बात मैंने पत्री जी से कहा।

तब उन्होंने मुझे डांटा, वह कहा कि सब महान है। अचरज में पड़ गया, यह क्या है कि पैसे वाले को, ऊंचे पदों में रहने वाले को, महान मानते हैं,

सबको वह महान कहते हैं। उनके बारे में विस्तार से पूछने का हिम्मत मेरे में नहीं था।

बाद में जैसे जैसे मेर ज्ञान बढ़ता है वैसे वैसे मुझे समझ आया कि वे क्यों ऐसे कहा। यह सब मैंने क्यों बताया? कि आप में बहुत लोगों में निम्न भावना है, किसी काम का नहीं हूँ, मैं कुछ नहीं कर सकता हूँ, मैं कहां हूँ? और वे कहां? ऐसे भावों में हैं। लेकिन पत्री जी ने कहा कि सब लोग महान है। मुझे अन्नमाचार्य जी का एक गाना से समझ आया है।

ब्रह्मा एक ही है, पर ब्रह्मा भी एक ही है, दोनों समान है। महान और निम्न दोनों नहीं है। अन्नमाचार्य जी स्पष्ट किया कि सबके लिए श्रीहरि ही अंतरात्मा है। सबके ह्मदय में भगवान है अर्थात हरि है।

कारण सबके अंदर श्री हरि ही है। जब सबके अंदर भगवान है तो कौन बड़ा? कौन छोटा? अनंत शक्तिमय आत्मा सबके अंदर है। इसलिए जो एक करता है दूसरा भी वही करता है। एक जो हासिल करता है वही दूसरा भी हासिल करता है। एक जो स्थाई पर आगे बढ़ता है दूसरा भी वही स्थाई तक आगे बढ़ता है। इसीलिए जानना चाहिए कि कोई बड़ा नहीं और कोई छोटा नहीं है।

अन्नमाचार्य का गाना सुनने के बाद मुझे समझ आया कि पत्री जी ने सत्य कहा है। पत्री जी सत्य ही कहते हैं लेकिन असत्य नहीं कहते हैं, वह इतना महान है।

अन्नमाचार्य जी ने कितना साफ बताया कि उच्च - नीच कहीं भी नहीं है। वह कहते हैं कि सबके अंदर श्री हरि ही अंतरात्मा है। अर्थात हर एक के अंदर जो आत्मा है वह श्री हरि ही है।

लेकिन एक संदेश हो सकता है! कि इतने मतभेद क्यों है। हम आप जैसे क्यों नहीं कर पा रहे हैं, आप जैसे क्यों नहीं बात कर पा रहे हैं, आप जैसे क्यों नहीं कह पा रहे हैं। लेकिन, यह अंतर, गुणों के कारण ही है।

तुम अपने आप को छोटा या निम्न समझते हो ? इसका कारण तुम्हारे में होने वाला गुण ही है । उस गुण के कारण ही तुम अपने आप को कम समझते हो। पहले तुम्हारे में यह भावना दूर होना चाहिए तो गुण बदलना चाहिए। अगर गुण बदलना है तब मन को शुद्धि करना है, अगर मन शुद्धि होना है तो आपके अंदर शक्ति बढ़ना है। अगर शक्ति बढ़ना है तो -

1. गहरी ध्यान साधना करना चाहिए।
2. खाने पीने के नियमों को पालन करना चाहिए।

यह दोनों काम करना चाहिए। मुम्मिडिवरम बालयोगी जी ने कितने साल ऐसा ही बैठ गया, तो कितना शक्ति कमाया। अगर अभ्यास आदत हो जाए तो घंटों मिनटों की तरह गुजर जाता है। ऐसा लगता ही नहीं कि आप बैठे हैं।

6 महीने ऐसे गहरी ध्यान करने से, साथ ही यह नियमों का पालन करते रहने से, मनुष्य पक्का महान बन जाता है। इससे बढ़कर पाने वाला और क्या हो सकता है। अगर मनुष्य को महात्मा बनना है तो 300 जन्मों लेना पड़ता है। यदि आप अभ्यास करें, 6 महीनों में ही प्राप्त कर सकते हैं।

शक्ति बढ़ते बढ़ते बुद्धि में परिपक्वता आएगी, विवेक मिलेगा और विचक्षण ज्ञान मिलेगा, और ज्ञान बढ़ जाता है। जब ज्ञान आग की भांति तेजोमय होता है, तब कर्म भी दग्ध हो जाता है। जब कर्म दग्ध हो जाएगा, तब आपके आवश्यकता के अनुसार प्रकृति ने आपको अतींद्रिय शक्तियां देती है। इससे सामने वाले के मन में जो सोचते हैं वह उसे पता चलता है। दिव्य चक्षु काम करने लगता है, सूक्ष्म शरीर यान करते हैं, जरूरत पड़ने पर वह पिछले जन्मों को भी जान जाते हैं।

यह शक्तियां का इस्तेमाल करते हुए वे अपने ज्ञान को बढ़ाते हैं। ज्ञान को बढ़ाना ही नहीं सत्य को आचरण में लाते हैं। पत्री जी ने बताया कि वही पराकाष्ट है। ऐसे लोगों को सत्यलोक में जाने की योग्यता प्राप्त होगी।

गुणों से ही कर्म बनते हैं।

'मनुष्य के गुण के अनुसार उनके कार्य निर्भर होते हैं, उनकी बातें निर्भर है, उनके करने की सेवा भी निर्भर होती है'। आज हम मालूम करेंगे कि जो गुण में रहते हैं उनके दान धर्म कैसे होते हैं।

तमो गुण ।

इस तमो गुण में रहने वाले कोई भी दान धर्म नहीं करते हैं । उनके पास जो धन है, उसको शराब पीने के लिए और दूसरों को पिलाने के लिए इस्तेमाल करते हैं।

अपनी धन को उस शराब की दुकानों में और बियर की दुकानों में इस्तेमाल करते हैं। उनके पास जो बचा धन है उसको जब बेहोश पड़े रहते हैं तब कोई चोर चुरा लेता है। वह आदमी को पता नहीं चलता, थोड़ी देर के बाद नशा उतर जाएगी, तब वह अपने जेब को देखेंगे तो क्या होगा? जेब सारी खाली दिखता है।

तब पैसे गए करके रोते हुए बैठ जाते हैं। और फिर क्या करना है उनको पता नहीं चलता, इसलिए सबको गाली देते रहते हैं। उस गुस्से में कांपते हुए किसी दीवार को टकराते हैं, नहीं तो किसी पेड़ से टकराते हैं। इसे फिर चोट लगता है, फिर से दुखी हो जाते हैं , यह है तमो गुण में रहने वाले की हालात।

उस नशे में इधर-उधर वालों को मारते हैं, वे लोग चुप थोड़ी रहेंगे। पुलिस केस कर लेते हैं। फिर नए तौर से पुलिस केस उनके ऊपर आ टपकता है। उसके लिए वकील रखता है, और उनकी फीस, उस कार्यालय के चक्कर मारना और घूमना और उनके रिश्वत खिलाने, सब संभालते हुए, इसकी जिंदगी ही खत्म हो जाती है। ऐसे लोगों की जिंदगी इस लोक में बहुत नीच निकृष्ट जिंदगी होती है।

ऐसे काम करने वाले मरने के बाद नरक में जाएंगे। जाना ही नहीं फिर से जन्म लेने से भी नीच निकृष्ट जन्म ही आएगा। ऐसे लोगों की हालत भगवान ही जाने, उनकी जिंदगी ऐसे रहेगा।

उनको बहुत जन्म ऐसे ही गुजर जाएगा। वह आजू-बाजू के लोगों को देखते हैं और उनसे अपनी जिंदगी का तुलना करते हैं। और सोचते हैं कि ऐसी जिंदगी ही नहीं चाहते, तब उनमें थोड़ा से बदलाव आता है। धीरे-धीरे गुण में भी बदलाव आता है। पत्री जी ने कहा कि गुण बदलने के लिए सौ साल, डेढ़ सौ साल लेना पड़ता है। ऐसे गिरते उठते मर-मर कर रजो गुण में आते हैं।

रजो गुणा ।

इस रजो गुण में जो आते हैं वे सब अपने बड़प्पन दिखाने के लिए खर्च करते हैं। अपनी छवि दिखाने का खर्च करते हैं, वैभव और आडंबरों दिखाने के लिए खर्च करते हैं, नाम कमाने और ख्याति केलिए खर्च करते हैं।

वे लोग जो खर्च करते हैं, वह ऐसा होता है कि विधायकों, सांसदों और मुख्यमंत्री जी उन्हीं के गांव में आते हैं, समझता है की उन्हीं की घर में आ रहे हैं। और उन्हीं की गलियां में आ रहे हैं जैसा हंगामा करते हैं। देखे ऐसा होता हैं कि गांव की शादी में कुत्तों के हंगामा जेसे, ऐसे होता है उनकी हंगामा ।

रजो गुण वाले खर्च करते समय आडंबरता ज्यादा दिखाते हैं। बड़े-बड़े उच्च पद वाले किसी की घर में आते हैं तो, यह बात सबको पता चलना है करके यह रजो गुण वाले पांफलेट बनाना, बंद लगाना, जैसे हंगामा करते हैं, बैनर लगाने जैसे हंगामा करते हैं। यह सब रजो गुण के लक्षण हैं।

यही नहीं उनके लिए और कुछ चाहिए तो शराब और गाना बजाने का भी व्यवस्था कर लेते हैं। ऐसे खर्च करते हैं। अंत में वह लोग जो कार्य करते हैं, उससे थोड़ा सा भी पुण्य पुरुषार्थ नहीं मिलेगा।

वे जो खर्च करते वैसे होता है। ऐसे और सौ, डेढ़ सौ जन्म गुज़र जाते हैं। धीरे-धीरे उनके गुण में बदलाव आता है। तब सात्विक गुण में आते हैं।

सात्विक गुण ।

सात्विक गुणों वाले भगवान पर इच्छुक होते हैं, और सहनशीलता भी होती है, थोड़ा दान और धर्म करते हैं, अन्न दान, वस्त्र दान, ऐसे तरह तरह के दान, श्रम दान करते हैं। वे लोग जो भी दान करें, जो भी काम करें, सब के लिए लाभदायक होता है।

किसी क्षेत्र भी हो ऐसे दान करना, मदद करना, आर्थिक रूप से सहयोग देना, यह सब काम करते हैं ।

कडताल में देखो कितने लोग कितने तरह से देते हैं। यह भी सात्विक गुण में ही आता है। ऐसा कुछ लोग धन देने वाले, कुछ श्रमदान करने वाले और कुछ भाषण से अच्छी बातें सिखाने, बताने वाले, ऐसा सभी तरह की सेवाएं भी करने से, समझो कि हम सात्विक गुण में आए ।

आप सब भी कोई-न-कोई सेवा करते हैं, कि बगैर कुछ नहीं कर कर कोई भी नहीं है, अपनी अपनी स्थाई के अनुसार सेवा करते हैं। ऐसे देना ही सात्विक गुण का लक्षण हैं।

ऐसा सात्विक गुण बढ़ते बढ़ते उनकी सेवा देने का गुण भी बढ़ता है। आपको देने का मन नहीं है, समझे अब भी सात्विक गुण में नहीं आया। देने का इच्छुक नहीं हैं। बहुत लोग चंदा के लिए अमीर लोगों के पास जाते हैं। लेकिन पैसा होने से भी नहीं देते हैं। लेकिन जो पैसा वाला है, नहीं देता है।

जो दिल वाला है, वही देता है। जिनमें सात्विक गुण होते हैं, वे जीवो के प्रति, पशुओं के प्रति, दया होती है। ऐसे लक्षण वाले शाकाहार रैली करते हैं, और पिरामिड बनाना ऐसा काम करते हैं। सात्विक गुण के स्थिति के अनुसार ही, करने वाले सभी अच्छे कर्म निर्भर है।

यहां 10 लोगों को मदद करने वाले सज्जन है। और 10 लोगों को अपकार करने वाला दुर्जन हैं।

देखिए पानी को कितना पवित्र जगह में रखने पर भी पानी ढलान की तरह जाती है। ऐसा ही सज्जन जब तक जिंदा रहेंगे तब तक अच्छा व्यवहार और काम करते हैं। किसी भी समय, किसी भी हालत में भी, वह अच्छा काम और व्यवहार करते हैं। अंत में अच्छा करके ही जाएगा ।

पत्री जी को गौर से परखने से हमें मालूम होता है कि सब को किसी प्रकार फायदा, या उपकार या अच्छा करना ही चाहते हैं, और करते भी। हमने परख लिया कि पत्री जी मरते दम तक किस तरह की सेवा कर रहे हैं। उनमें जाने की ताकत नहीं तो भी लद्दाख गए थे।

ऐसा ही रामायण में जटायु ने जब तक जिंदा था, तब तक दशरथ

महाराज के लिए बहुत सहयोग दिया। मरने के समय में भी राम लक्ष्मण को उसने बताया कि सीता माता को उस तरफ ले गया। यह कह कर पक्षी राज मर गया। ऐसा सात्विक गुण में रहने वाला, मरने के समय में भी कोई उपकार करके ही जाएंगे। कुछ नहीं करने पर भी ऐसे कार्यक्रम होता तो सुनकर बहुत खुश हो जाते हैं।

दुर्जनों :- दुष्ट काम करने वाला जब जिंदा है तब तक बुरा काम ही करते हैं। और मरते समय में भी दुष्ट कार्य करते करते मरते हैं। विश्वामित्र जी ने लोक कल्याण के लिए यज्ञ करना चाहा। इतना अच्छा काम करते थे, लेकिन राक्षस मारीच और शुभाहुओं ने उस यज्ञ को बर्बाद करना चाहा।

मारीच नामक राक्षस ने जान जाने के समय भी अपकार किया था। सोने की हिरण का वेश धारण करके जब राम जी ने तीर चलाता तब नीचे गिरते समय हे लक्ष्मण! हे सीता! चिल्लाते-चिल्लाते मर गया ।

रामचंद्र जी को कुछ हो गया समझकर सीता जी ने अपने को रखवाली करने वाला लक्ष्मण को राम के पास भेजी। दरअसल में देखने पर वहां मरने वाला राम नहीं, राक्षस मारीच था। इतने में रावण आकर सीता जी को ले गया। ऐसा होता है दुष्ट लक्षण वालों के काम। जब जीवित था किसी को अच्छा नहीं करता, मरने समय पर किसी को अच्छा नहीं करता।

जिनमें दुष्ट लक्षण होते हैं कोई अच्छा काम करने से उनको दुख लगता है, खुश नहीं होते, लेकिन जरूर दुखी होते हैं। और भी दुष्ट लक्षण वाले कुछ लोग अच्छा नहीं करते बल्की बिगाड़ने का प्रयास करते हैं।

उस तरह के गुण परिवर्तन लाने के लिए हमारे साधकों रात भर अभ्यास किया, यह सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई। आप मन को शुद्ध कीजिए, वह पवित्र बुद्धि ही आपको आगे बढ़ाती है।

मन जितना शुद्ध होगा बुद्धि उतना ही ज्यादा विकसित होगा। जब बुद्धि विकसित होगा तब उनके काम उतना पवित्र और शुद्ध होगा। इतना ही नहीं जो अच्छा बनना के लिए और बुरा बनने का मूल कारण मन है, गुण ही प्रधान है।

उसको बदलने का एकमात्र रास्ता 'श्वास पर ध्यास' माने ध्यान, पत्री जीने यही बात बताई और भगवान बुद्ध ने भी यही बात बताएं ।

महान लोगों का बताए गए और एक विषय मालूम करेंगे।

जो कोई भी मनुष्य हो अपने हाथों से धर्म मार्ग में कमाकर, खुद खाकर उसमें कुछ दूसरों को बांटना चाहिए, ऐसे लोग ही भगवान को प्राप्त कर सकते हैं।

भगवान को पाना अर्थात भगवान को पाने का रास्ता जानना। सब मालूम करके आचरण में लाने पर अंत में उस भगवान को पा सकते हैं। सारे दुखों से बाहर हो जाते हैं। अंत में मोक्ष को प्राप्त कर लेता है। अर्थात जन्म राहित्य की स्तिथि में आ जाते हैं, मतलब पृथ्वी पर जन्म नहीं लेते। जन्म ना लेने से, तो दुख कहां है? शाश्वत के लिए दुख से बाहर हो जाते हैं। कोई भी मनुष्य चाहने वाला, कोशिश करने वाला, यही है।

अगर भगवान में लीन होना है तो खुद मेहनत करके कमाकर खुद खाकर और दूसरों को बांटना। यही महान लोगों ने दिया गया संदेश है। इस रास्ते जाने के लिए कुछ हासिल करने के लिए किसी को भी शरीर की आवश्यकता है। वैसे ही शरीर के लिए कुछ जरूरतें होती है। वह खाना, घर, कपड़े और पति या पत्नी।

जरूरतों को पूरा करने के लिए किसी को भी धन कमाना चाहिए। धन कमाने बगैर शारीरिक जरूरतों पूरी नहीं होती। धन जितना जरूरी है उतना ही होना चाहिए। याद करने वाली बात यह है कि जरूरत अलग और इच्छाएं अलग। इच्छाओं का गुलाम बनेगा तो करोड़ों कमाने से भी पूरा नहीं होता। देखिए बड़प्पन के लिए करने वाले दावत में कितना खाना बेकार हो जाता है, कितना बर्बाद हो जाते हैं!

पत्रीजी कहते थे कि मनुष्य के लिए एक रोटी, थोड़ा आचार काफी है ना। इसलिए महान पुरुष कहते थे कि जितना जरूरत है उतना कमाओ। ज्यादा कमाने के चक्कर में हमें गलतियां नहीं करनी चाहिए। अधर्म मार्ग में कमाने की जरूरत नहीं है। अनेक पाप करते करते सृष्टि के प्रतिकूल जीवन बिताने की

जरूरत नहीं है। इसलिए जान लीजिए इच्छाएं पूरी करने के लिए कमाना है अर्थात पापों करना ही पड़ता है। उसके फलस्वरूप करोड़ों होते हैं लेकिन मुसीबतों से, अनेक प्रकार के बीमारियों से, दुखी होता है। पता नहीं कब मरेंगे, दरअसल में वह जिंदगी ही नहीं है।

इसलिए जो तुम कमाते हो उसमें खुद खाकर, और थोड़ी सी कमाई दूसरों को बांटना चाहिए, तब उनका शरीर स्वस्थ होता है, कोई समस्याएं नहीं होती, तकलीफ नहीं होती, और बीमारियां भी नहीं होती। ऐसे शरीर से भगवान को पाने का प्रयत्न करते हैं। आजकल हम सब भगवान को पाने का प्रयत्न करते हैं, करोड़ों कमाने का चाहत नहीं है, सबसे बड़ा बनने का चाहत नहीं है। हम सब की इच्छा है कि भगवान को प्राप्त करना। इसलिए जो कुछ है उसमें से थोड़ा सा बांटने ने से ही भगवान को पाने का मार्ग मिलेगा। यह बात जान लीजिए। इसलिए हम भगवान के बारे में, भगवान को पाने का रास्ते के बारे में, मालूम करेंगे।

खास करके -

1. भगवान कौन है? 2. वे कहां रहते हैं? 3. वे क्या करते हैं? 4. भगवान को पाने के लिए क्या करना चाहिए?

यह सब जान लेंगे ।

यह सब कौन जानते हैं? जैसे महान पुरूषों ने कहा कि खुद कमाकर खुद खाकर दूसरों को थोड़ा बांटना आता है, ऐसे करने से ही सफल हो सकते हैं। मालूम किया कि इतना ही नहीं भगवान को पाने का रास्ता 'श्वास पर ध्यास' ध्यान।

पत्री जी के मार्ग में न आने वालों को यह मालूम नहीं है कि भगवान एक आत्मा है। वह समझते हैं कि भगवान मंदिरों में रहते हैं, लेकिन उनको मालूम नहीं है कि भगवान समस्त जीवो में रहता है।

भगवान क्या करते हैं? अर्थात समझते हैं कि नारियल लेकर मांगने से

इच्छाएं पूरी करता है। लेकिन मालूम नहीं है कि वह अंतरात्मा के रूप में हम में हैं, जो गलतियां करने से पहले, पाप करने से पहले, हमें चेतावनी देता है।

भगवान की आराधना कैसे करना चाहिए? समझते हैं कि हल्दी, कुंकुम और अगरबत्ती, से पूजा करना चाहिए। लेकिन जानते नहीं कि भगवान को ध्यान के ज़रिया आराधना करना चाहिए।

लेकिन सत्य रूपी भगवान के बारे में भागवत गीता में श्रीकृष्ण भगवान ने कहा है।

श्लोकः अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः ।
अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च ।। (भ.गी.10 - 20)

तात्पर्य :- 'हे अर्जुन, मैं एक आत्मा हूँ ', सभी प्राणियों में स्थित हूँ। जब सृष्टि ना हो तब मैं हूँ, जब सृष्टि हो रहा है तब भी मैं हूँ , जब सृष्टि का अंत होता तब भी मैं हूँ ।

श्री कृष्ण भगवान ने कहा कि अर्थात मैं एक आत्मा हूँ ।

उन्होंने कहा कि मैं सभी प्राणियों में आत्मा के रूप में हूं। क्या आत्मा दिखाई देता है? आत्मा दिखाई नहीं देता अर्थात भगवान शक्ति रूप में हैं।

भगवान का रूप ही शक्ति और चैतन्य, आनंद और विस्तार स्र्प ज्ञान ही उनका स्वस्र्प है। सबके शरीरों में आत्मा के रूप में रहकर सृष्टि धर्म, और नियम सिखाते हैं।

वैसे काम जो धर्म के खिलाफ, जब करते हैं तब चेतावनी देते हैं । वह समय समय पर चेतावनी देते रहते हैं कि यदि तुम अधर्म का आचरण करोगे तो हानि और कष्ट उठाएंगे। वह हमें सदा अपने सब गुणों की याद दिलाता है। उसे अंतरात्मा का प्रबोध माना जाता है।

इसलिए मालूम कीजिए कि जो भगवान से मिलता है वो ही धर्म है। बहुत लोगों को यह समझ नहीं है, मालूम नहीं कि भगवान अपने धर्म को अंतरात्मा के रूप में बताता है। ना जानने का कारण अशुद्ध मन ही है।

लेकिन ध्यान के द्वारा जो मन को शुद्धि करता है वह भगवान बता ये गया धर्म के बारे में जानता है।

हम सब ने भगवान को पाने का रास्ता जान लिया है, भगवान को पाने की योग्यता हमको है, इसलिए पत्री जी का अनुसरण किया।

इस ध्यान मार्ग में आना, गंभीरता से ध्यान करने का मौका मिलना, किसी जन्म में किया हुआ पुण्य के कारण ही संभव है।

कोई भी इस पृथ्वी पर आने से पहले ही निर्णय करते थे कि ध्यान करना है, और ज्ञान कमाना है। ऊपर के लोकों से इस पृथ्वी पर आने से पहले ही हमे योजना बनाते थे कि कैसे जीना है? क्या पाना है? लेकिन आने के बाद सब भूल जाते हैं।

कारण क्या है कि जिस घर और धर्म में वे पैदा होते हैं उसका प्रभाव उन पर पड़ता है, जिस जाती में जन्म लेता है उस जाति का प्रभाव उन पर पड़ता है, जिस परिवार में जन्म लेता है उस परिवार का प्रभाव उन पर पड़ता है। इसलिए इन सबके प्रभाव से कोई भी जो करने का थान लेता है वह नहीं होता, करता एक होता दूसरा है। जो ठान लेता है वह नहीं होता। लेकिन प्रकृति के प्रतिकूल उल्टा धर्म करेगा तो प्रकृति नहीं मानेगी।

किसी एक रूप में भगवान की तरफ चलाती है। ऐसा हम में बहुत लोगों को पांफलेट या दोस्तों और रिश्तेदारों के माध्यम से ध्यान मार्ग में परिचय किया गया। ऐसे ही कुछ लोग बीमारियों से, कुछ लोग बेचैनी से, और कुछ समस्या से आते हैं। इस रास्ते में आकर ध्यान करते करते सब परेशान दूर हो जाएगी। सब काम अनुकूल हो जाता है।

मैंने बिजनेस में 30 साल बिताया, तरह तरह व्यवसाय किया। लेकिन मैं जो करना था कि सबको ज्ञान बांटना, लेकिन वह काम ना करके दूसरा करने से मुझे सब प्रतिकूल हो गया। उस समय में पत्री जी से मुलाकात हो गया।

पत्री जी बताई गई ही बातों से मैं उनकी तरफ प्रेरित हो गया, माने

आकर्षित हो गया, मैंने सब बिजनेस छोड़ दिया और यह रास्ता पकड़ लिया। ध्यान करते हुए मैंने ज्ञान कमाकर सबको बांटा। फिर से परिवार वालों का सहयोग मिला। मैडम के सहयोग से 2004 से लगातार अभी तक आत्मज्ञान शिक्षण शिविर में क्लास चला रहे हैं। बहुत लोगों को ज्ञान बांटने में सफल हो गया।

दुनिया में लाखों लोग ध्यान नहीं करते हैं। इस रास्ते में आए हुए सभी गहरी अभ्यास करते हुए, ज्ञान पाया और ज्ञान पाना ही नहीं बल्कि उस ज्ञान को सबको बांटना। ऐसे करने से सभी काम सुचारु रूप से चलता है। सब कुछ एक साथ आता है। लेकिन ना करने वाले काम करने से कभी भी सफल नहीं होंगे।

लेकिन हम अपने योजना के अनुसार जीने से कोई भी तकलीफ नहीं रहेगा, सभी काम ठीक हो जाएगा। इसलिए आजू-बाजू लोगों से तुलना करने की जरूरत नहीं। बाजू वाले के चाल-चलन की तुलना से हमारा चाल-चलन अलग होता है। हम जो पढ़ने वाले किताबें हैं, वीडियो के जरिए सुने प्रवचन भी दूसरों से अलग होते हैं। यही नहीं हमारे जीवन में पहले की चाल चलन, बातें, किया हुआ काम, सब आजकल के जीवन से बहुत अलग होते हैं।

क्या पागल हो गया है? कोई आपसे कहा तो, समझिए आप आज आध्यात्मिक रूप से आगे बढ़ रहा है। गौर से देखने पर दुनिया के लोग एक तरह से जीते हैं, लेकिन इस रास्ते में आए लोग दूसरे तरह से जीते हैं।

लेकिन आप आत्मा के विपरीत चलने पर दुख शुरू हो जाता है। हम जो करना है ना करके दूसरा काम करने से आत्मा दुखी होता है, उसी को 'आत्मा घोष' कहते हैं, तब हमें तकलीफ शुरू हो जाते हैं।

पत्री जी ने कहा कि भगवान से मिलने का एकमात्र रास्ता, 'श्वास पर ध्यास', ध्यान। हम समझते हैं कि यह समस्याएं हैं लेकिन वह समस्याएं और परेशानियां नहीं है, हम जो करना है वह ना करने से परेशानियां ऐसा ही होगा। जो करना है वह करने से परेशानियां नहीं होती।

महान लोगों ने और क्या कहा? कि **'अगर भगवान से मिलना है तो किसी भी जीव को दुखी नहीं पहुंचनी चाहिए। जीव हिंसा नहीं करना चाहिए, किसी भी जीव को हानि नहीं करना चाहिए'।**

ऋषियों और महर्षि लोगों जंगल में ही रहते थे। कितना भी हिंसक इन सब जानवर हो उन ऋषियों को हानि नहीं करते, ऊपर से वे उनसे स्नेह भाव से जीते हैं।

स्वामी रामा जी ने जिस पेड़ पर मधुमक्खियां छत्ता था, उस पेड़ पर चढ़ कर फल तोड़कर नीचे उतर आता। जान लेना चाहिए कि मधुमक्खियां उसे कुछ नहीं किया है।

अर्थात अगर हम किसी भी जीव को तरफ नहीं जाएंगे तो वो भी हमारी तरफ नहीं आएगी। महान लोगों ने जान गया कि हर एक जीव जंतु भगवान का स्वरूप है। किसी भी प्राणी को हानि पहुंचाने से समझो ईश्वर को भी हानि पहुंचाने जैसा ही है।

इसीलिए प्राणी को पीड़ित करने से मानो ईश्वर को पीड़ित किया। अगर कोई ईश्वर को पीड़ित करता है तो ईश्वर को कैसे पाएगा? रास्ता ही नहीं पाया तो ईश्वर को कैसे पाएगा? अगर तुम ईश्वर को पाओगे तभी दुख से बाहर आओगे।

कोई भी प्राणी को काटते वक्त मुझे कांटों करके नहीं बोलेगा। इसलिए घर आए रिश्तेदार को और दोस्तों को खुश करने के लिए मांसाहार नहीं देना चाहिए।

बहुत लोग पिछले जन्म में ईश्वर को पानी का योग्यता पाया। लेकिन जन्म लेने के बाद पारिवारिक प्रभाव से, समाज के प्रभाव से, जो ना करने वाले काम करते हैं। इंसान ने जानवरों को और पक्षियों को खाने के लिए इस पृथ्वी पर नहीं आया, लेकिन उनके मां बाप ने उसको मांसाहार की आदत कराया। लेकिन ध्यान मार्ग में आते तुरंत मांसाहार खाना छोड़ देता है। ऐसा ही,

अभ्यास करने का इच्छुक होते हैं।

अगर ध्यान में आना है तो पिछले जन्म का पुण्य फल होना है। अर्थात पिछले जन्म में योग्यता प्राप्त होगी, अर्थात पिछले जन्म में पुण्य कमाकर योग्यता कमाया होगा। लेकिन परिस्थितियों का प्रभाव से ऐसा है। पत्री जी ने गांव गांव घूमकर ध्यान के बारे में प्रचार किया। लेकिन कुछ लोग इसलिए आते हैं कि ध्यान करने से फायदा होगी। अनुभूतियां आ सकते हैं, बीमारियां ठीक होंगे और इच्छाएं पूरी हो जाएंगे।

इस प्रकार तरह-तरह के फायदा के लिए इच्छुक होकर अभ्यास करते हैं। लेकिन योग्यता न होने के कारण ध्यान में आने से भी अभ्यास नहीं कर पा रहे हैं। पत्री जी ने कहा कि 'श्वास पर ध्यास' ध्यान, लेकिन बहुत लोग ध्यान का मतलब ना समझ कर, बातों पर ध्यान, म्यूजिक पर ध्यान, ऐसे ध्यान करते हैं।

लेकिन पत्री जी ने कहा कि 'श्वास पर ध्यास' ध्यान। अगर ध्यान में ना सोचते स्थिति आता है, मन न काम करने की स्थिति आयेंगे, तो शक्ति आएगी।

पत्रीजी म्यूजिक मेडिटेशन क्यों करवा रहे हैं? क्यूंकि नए लोगों को आदत करवाने के लिए। इसलिए महान लोग जो कहते हैं उसी को करना चाहिए, लेकिन जो किया वह नहीं करना चाहिए, यह बात जानना चाहिए।

गहरी विचारों से आसानी से बाहर आने का सरल और सुगम रास्ता, 'श्वास पर ध्यास' ध्यान है । ध्यान में घंटों घंटा बैठना चाहिए, मन की पूरी विचार और समस्याएं खाली करना चाहिए, विचार आने से बैठ नहीं पाते। मन में होने वाले कूड़ा करकट विचारों को खाली करने मार्ग 'श्वास पर ध्यास' ध्यान है।

यह रास्ता के सिवाय कुछ भी करो, विचार बढ़ते हैं लेकिन कम नहीं होते हैं। कैसे?

1. देखिए पड़ोस में पति-पत्नी झगड़ा करते हैं तो, सुनकर उनके घर जाते हैं। वहां पत्नी एक तरह बताती और पति एक तरह से, सुनकर इनका दिमाग़ घूम जाता है। अगर यह ध्यान में बैठ्ते हैं वही बातें याद आते हैं, अगर वहां नहीं जाने से ऐसे विचार आएगी नहीं न?

2. देखिए कुछ लोग तीन दिवसीय क्लास में आकर फोन करके घर की बातें सुनते हैं फिर वह ध्यान में बैटते ही वही का बातें विचारों के रूप में आते हैं।

3. चुनाव में हारने से उन विचारों से बाहर आने के लिए विचारों आने के लिए सालों लगता है। कोई बातें अंदर जाना आसान है लेकिन बाहर निकालना बहुत मुश्किल है।

याद रखिए दूसरों को अच्छा करने से ईश्वर हमें अच्छा करता है। हम किसी को कुछ नहीं करेंगे लेकिन हमारा अच्छा होना है तो, कभी भी अच्छा नहीं होता। अर्थात हम दूसरों का भला करते हैं हमारी भलाई होगी। अतः कुछ करो और पाओ। दूसरों की मदद करेगा तो भगवान हमारी भलाई करेगा।

जहां तक हो सके अपनी-अपनी स्थाई के अनुसार ध्यान करना चाहिए। हमारी वजह से किसी को नुकसान या पीड़ा नहीं होना चाहिए। ऐसे ही हमें जीवन बिताना चाहिए। महात्मा लोगों को दिया गया संदेश यही है।

'श्वास पर ध्यास' ध्यान रखने से विचारों कम हो जाएगा।

विचार कम होने से, खाली होने से, ध्यान में घंटों घंटे बैट सकते हैं। कई फायदे पा सकते हैं। ध्यान मामूली सा नहीं है, उसे कम नहीं समझना, ध्यान फायदे के लिए नहीं बल्कि ज्ञान के लिए करने से महान बन जाते हैं।

हम सबको ईश्वर को पाने का रास्ता मिला था, ध्यान मिला था, अपने को योग्यता होने से ही इस रास्ते में आएगा। एक बात याद रखिए कि महान लोगों जो बताया वह करना चाहिए, लेकिन जो किया है उसे नहीं करना चाहिए।

दुनिया की लोगों को गौर से देखने से पता चलता है कि वह कई प्रकार के समस्याओं से तिल मिल हो जाते हैं। हर एक का और अलग अलग समस्याएं हैं। समस्या बहुत पीड़ित करते है और सामना करना बहुत मुश्किल है। उन समस्याओं से पीड़ित होने वालों को शांति नहीं होती, कोई भी काम आनंद और खुशी से नहीं कर पाते, ऐसे लगता है कि यह जिंदगी क्यों मिला? जानते नहीं समस्या क्यों आया, मुझे ही क्यों आया, ऐसा सोच कर दुखी होते हैं। जब कुछ नहीं कर पाते सब ईश्वर को ऊपर निंदा डालते हैं। समझते हैं कि ईश्वर मुझे क्यों कष्ट देता है। ऐसा किसी को भी देखो समस्याओं से दुखी है।

पत्री जी ने कहा कि अपनी यदार्थ स्थिति का खुद ही सृष्टि कर्ता है, अथवा मुसीबतों को मैंने ही सृष्टि किया, अर्थात मैं ही कारण हूं। यह बात अच्छी तरह समझना चाहिए।

बहुत लोग कहते हैं कि मांस ना खाने से ताकत कहां से आएगी? लेकिन मांसाहार हिंसा करने से ही आएगी। यही नहीं, जैसे हिंसा करते हैं वैसे ही हिंसा पाओगे, मतलब जो बोया वही पाया, जो किया वही पाना पड़ता है। गौर से देखने पर, करना आसान है, भुगतना मुश्किल है। देखिए मुर्गी का गर्दन काटते हो, घर में बनाता है, और कुछ दिनों के बाद 'स्पांडलाइटिस' की बीमारी से उनके गले में पट्टा डालते हैं, अथार्त जो किया वह भुगतना करेगे, और नहीं किया तो नहीं भुगतना है ना।

इसलिए कम से कम अब से जीवन बदलने की आदत डालिए। अगर ध्यान करने से बीमारियां कम होगा, खास नहीं है। ध्यान करके ज्ञान प्राप्त करना वही खास है।

1. ज्ञान का मतलब जो हमारे आंखों से ना देख पाते हैं उनके बारे में जानना।

2. पत्री जी ने कहा कि ज्ञान का मतलब मैं शरीर नहीं हूं, मैं आत्मा हूं। यह जानना है।

सृष्टि में दिखाई देने वाले छोटी सी अनु के बराबर है, लेकिन नहीं दिखाई देने वाले पहाड़ के बराबर है। इस जिंदगी के अलावा आंखों से ना दिखाई देने वाला जिंदगी बहुत कुछ है।

जब शरीर रहता है सब आंखों से दिखाई देने वाली जिंदगी जीते हैं। मरने के बाद शरीर को जला देते हैं। आत्मा रूपी तुम होगा, उस जिंदगी दिखाई नहीं देगा। लेकिन ऐसा आंखों से ना दिखाई देने वाले जिंदगी है यह जानना ही ज्ञान है।

दिखाई ना देने वाले जिंदगी के बारे में जब जिंदा रहते हैं, तब पता नहीं चलता। जो ना दिखाई देने वाले है, वह सब, न दिखाई देने वाले लोकों में रहते है।

सूक्ष्म लोक दिखाई नहीं देता, लोकों में होने वाले नहीं दिखाई देता, ऐसे ना दिखाई देने वाले के बारे में जो जानता है, वही ज्ञानी है।

सृष्टि में ना दिखाई देने वाले लोक हैं। सात ऊपर लोक और साथ नीचे लोक।

सृष्टि में दिखाई देने वाले लोक समुंद्र में एक बूंद जैसा होता है, नहीं दिखाई देने वालो समुंद्र जितना।

दिखाई देने वाले लोक सूरज, चांद, नक्षत्र, नवग्रह और अज्ञात लोकों बहुत है। पत्री जी ने कहा कि लाखों भूमंडल हैं। उनमें महान कौन हैं पूछने से, कहा कि सबके अपने-अपने विशिष्टता है। ऐसे कई सूरज और चांद है। जब ज्ञान बढ़ जाता है तब सृष्टिकर्ता का महानता समझ कर आश्चर्यचकित होता है।

सृष्टि कि महानता के बारे में अपने बचपन में एक पंडित जी ने कहा गई एक पुराणों में कथा को जानेंगे।

सृष्टि में सबसे बड़े महान परब्रम्ह है, उस को सृष्टि कर्ता कहते हैं। उन्हीं

से रचित किया गया ब्र्स्मा, विष्णु, महेश्वर, में कुछ अहंकार प्रवेश किया।

सृष्टि को करने वालों हम है समझ कर घमंड हो गया। परब्र्म्ह जी ने उनको सबक सिखाने के लिए कहा कि मेरे साथ आओ और उन तीनों को आंखें बंद करने को बोला और करोड़ों करोड़ों मीलों दूर तक लेकर गया।

एक जगह परब्र्स्म ने कहा कि आप लोग आंखें खोलो, आंखें खोलकर देखने पर वहां ब्र्हमा, सरस्वती हैं। तब ब्र्स्मा आश्चर्यचकित हो गया। क्या और एक ब्र्हमा भी है? तब तक उसने समझा कि मैं ही ब्र्हमा, सृष्टि करने वाला मैं ही हूं। अब और एक ब्र्हमा दिखाई दिया तो उन्होंने आश्चर्यचकित होना ही नहीं बल्कि उनका घमंड भी चकनाचूर हो गया है।

बाद में परब्र्म्ह ने उनको फिर से आंखों बंद करने को कहा और उनको करोड़ों करोड़ों मील सफर करने के बाद आंखें खोलने को कहा। बात है कि वहां और एक वैकुंठ ही नहीं बल्कि वहां विष्णु, लक्ष्मी भी विराजमान थे। उनके अचरज की सीमा नहीं है। फिर से आंखें बंद करने को कहा और कुछ करोड़ों मील सफर करने के बाद फिर से आंखें खोलने को कहा। उन्होंने तुरंत आंखें खोलने से अब वहां और एक कैलाश नहीं बल्कि शिव, पार्वती विराजमान थे।

तब परब्र्म्ह ने उनसे कहा कि सभी पूरी जगत मैं हूं करके घमंड कर रहे हो, लेकिन इस सृष्टि में आप जैसे व्यक्ति कहीं सारे हैं।

इसलिए सृष्टि अनंत है, उसका सीमा नहीं है, उसका अंत नहीं है। यह बात जानना चाहिए। और जानने वाली बात यह है कि सृष्टि करने वाला सृष्टि कर्ता है, लेकिन दिखाई नहीं देता है। इतना ही नहीं सृष्टि कर्ता से बनाए गया धर्म है, उन्होंने बनाए सिद्धांत और नियम है। ऊपर की बातें जानना चाहिए। जिनको सृष्टि कर्ता ने रचाया, उनको संविधान भी कह सकते हैं। लेकिन वे दिखाई नहीं देता, लेकिन उसके के बारे में जानना ही, ज्ञान है।

दरअसल में मनुष्यों का करने वाले हिंसा से ही उनको कष्टों मिलता है। अगर कष्टों नहीं होना है, तब अहिंसा मार्ग में चलना चाहिए।

महात्माओं ने क्या कहा? कि '**किसी से कोई अपेक्षा ना रखें, सब की सेवा करना, और सहयोग देना चाहिए**'।

आशा एक भूत जैसा है, वह किसी को भी पिकल देता है। इसलिए शिर्डी बाबा ने ईषा वाष्य उपनिषद में ऐसा कहा कि :-

श्लोकः ईषा वाष्य मिधम सत्यं, यत्किंच जगित्यां जगत ।
तेन त्यक्तेन भुंजिधां मागृथं कष्यसिद्दिनम ।।

तात्पर्य : यह सृष्टि पूरा जड़ चेतना है अर्थात चर अचर रूपों को उस परम ब्र्म्ह से रचित है। इसलिए जो भी है, ईश्वर का है, जो भी मिला है वह ईश्वर का है, ऊपर की बातें जानना चाहिए। इसलिए ईश्वर से मिला हुआ संपदा को त्यागपूर्वक उपयोग करना चाहिए। किसी प्रकार का कंजूसी और मोह को उस पर नहीं रखना चाहिए। शिर्डी बाबा ने कहा कि किसी की अपेक्षा या चोरी नहीं करना चाहिए।

बड़े-बड़े महान योगियों ने यही सिखाया है। प्रतिकूल आचरण करने से जीवन में प्रतिकूल फल मिलेगा। दुनिया में कहते हैं कि यह मेरा है, असल में मेरा कहां है? मेरा, नाम का कुछ भी नहीं है। सब कुछ उन्हीं का ही है, उस परम ब्र्म्ह का ही है! सभी यहां कुछ अनुभव पाने के लिए और कुछ पाठ सीखने के लिए इस पृथ्वी पर आए। इसलिए इसके पहले आप जो योग्यता पाया उसी के अनुसार पाना पड़ता है, जो प्राप्त होना है वही प्राप्त करते हैं।

इसलिए कुछ लोगों के पास लाखों और करोड़ों हैं। कुछ लोगों के पास हजारों है, लेकिन कुछ लोगों के पास कुछ भी नहीं है, अर्थात थोड़ा भी नहीं है।

जानना चाहिए कोई कुछ भी हो या ना हो, आपकी नहीं है। इस पृथ्वी पर आते वक्त आपने कुछ लेकर नहीं आया, कुछ लेकर नहीं आया तो आप कैसे ले जाएंगे? जब जाने का समय आया तब सब कुछ छोड़ कर चले जाते हैं, कुछ बोले बगैर भी चले जाते हैं। कहते हैं मेरा मेरा। लेकिन मेरा कहां है ? आपने पाठ सीखने के लिए, अनुभव पाने के लिए ही आए हैं।

देखिए वह अपनी क्षमता के अनुसार रेलगाड़ी में सीट आरक्षण करते हैं। पेहला एसी या सेकंड एसी या स्लीपर या जनरल, ऐसा अपनी उपलब्धता और आर्थिक स्थिति के अनुसार सीट आरक्षण करते हैं। ऐसे ही पृथ्वी पर आपकी योग्यता के अनुसार आर्थिक स्थिति होता है।

रेलगाड़ी का टिकट कुछ घंटे का सफर के लिए आरक्षण करते हैं, जब तक रेलगाड़ी में है, तब तक यह टिकट मेरा मेरा कहते हैं। सफर खत्म होने ही उतर जाते हैं।

जिसके पास यह ज्ञान नहीं है वह मेरा मेरा करके मोह रखता है। जो जानता है वह न जानने वाले पर दया दिखाता है। देखिए रेलगाड़ी की सफर में बहुत लोगों की जान पहचान होती है। लेकिन मंजिल आने पर कोई तुम्हारे साथ नहीं आएगा। ऐसा ही जिंदगी के सफर में कोई स्थाई नहीं है और साथ भी कोई नहीं आएगा।

जीवन के सफर में पति और पत्नी का जान पहचान होता है। रेलगाड़ी में थोड़ा समय सफर करने के बाद आजू-बाजू वाले जैसे उतर जाते हैं वैसे ही जीवन की यात्रा में पति और पत्नी भी बीच में दूर हो जाते हैं। इसलिए मेरा मेरा है कहकर क्यों इच्छुक होते हैं? पाप और गलतियों क्यों करना? इतना ही नहीं जिसके लिए तुम अपराध और घोर अपराध किया, वह माफी लायक नहीं है। जब तुम जाओगे तब तुम्हारे साथ तेरे गलतियां और पाप ही साथ आएंगे।

इसलिए जानना चाहिए की जो भी हो! और जो भी मिला हो! सब ईश्वर का ही है!

पैदा होते ही कुछ होता है। बाद में अपनी योग्यता के अनुसार मिलता है। जैसे नौकरी, पद, धन, दौलत, कुछ भी हो, अपनी योग्यता के अनुसार मिलता है। लेकिन ऐसा ईश्वर से जो मिलता है उसे त्याग पूर्वक और आनंदपूर्वक अनुभव लेना चाहिए, कहते हैं शिरडी बाबा जी।

धर्म मार्ग में जो कमाते हैं उसमें से कुछ हम रखकर, और, कुछ दूसरों

में बांटना चाहिए। उसी को त्यागपूर्वक अनुभव करना कहते हैं! जब तक पत्री जी का परिचय नहीं हुआ तब तक मुझे कुछ नहीं पता, उनसे मुलाकात होने के बाद बहुत जान लिया।

इसीलिए ईश्वर से जो तुमने प्राप्त किया उसमें कुछ लोक कल्याण के लिए खर्च करो। जो लोक कल्याण के लिए खर्च करेगा वही त्याग पूर्वक अनुभव है। दूसरों की भलाई के लिए खर्च करने में कंजूसी मत करो। जो देना है नहीं दोगे, तो जो पाना है वह नहीं पाएंगे ।

मेरा देता, मेरा देता, समझते हो। लेकिन देने के लिए तुम्हारा कुछ नहीं है, सब कुछ ईश्वर का ही है। ईश्वर से जो मिला वही तुम बांटते हो। पत्री जी ने कहा कि बांटने से बढ़ता है। जो हमारा नहीं, न बांटने से कंजूसी, लोभी कहते हैं। कारण क्या है कि बांटना मुश्किल है, छिपाना आसान और इच्छा पूर्वक है। कोई योग्यता देने से ही आएगी, न देने से ना आएगी। यह सब जानकर शिरडी बाबा भिक्षाटन करके जीते थे।

लेकिन अज्ञानी लोग बाबा से धन दौलत पाने के लिए आरती देते हैं। मगर बाबा धन दौलत देने के बजाय उन्होंने ही बड़ा बंगला बनाकर आराम से रह सकते हैं ना? क्यों भिक्षाटन करेगा? अर्थात धन दौलत में कुछ नहीं है ना? इसलिए जानिए की जो कुछ नहीं देता उसको कुछ नहीं मिलेगा। हमारे पास जो कुछ है उसमें से थोड़ा बांटने से अगला जन्म में पाने की योग्यता प्राप्त करोगे।

इस सृष्टि में कोई स्थिर नहीं है, सृष्टि में बदलाव सहज लक्षण है, अब जो करेगा उसी के अनुसार भविष्य जीवन आधारित है, जान लो ना देने से कुछ नहीं आएगा। इतना ही नहीं जो हमारा नहीं है उसे लेने से चोरी करने के बराबर है! जो हमारा नहीं है उसे अपेक्षा नहीं करना चाहिए, नहीं लेना चाहिए। जो कुछ है जहां तक हो सके बांटना है, सब की सेवा करनी चाहिए, सहयोग देना चाहिए, समझो तभी त्याग पूर्वक जिंदगी जिया।

'सबसे बड़ा महान सेवा, अति उत्तम सेवा, ज्ञान बोध करना है'।

जान लीजिए

धन अस्थिर .... ज्ञान स्थिर ।

धन साथ नहीं आएगा .... ज्ञान साथ आएगा।

धन दुख बढ़ाती है .... ज्ञान दुख कम करती है।

धन इस लोक तक ही उपयोगी है, लेकिन ज्ञान, इस लोक और परलोक में भी फायदेमंद है। कितना भी धन दौलत हो, ऊपर लोक ना जा पाओगे, लेकिन ज्ञान होने से ऊपर लोकों तक पहुंच पाओगे।

अगर यहां कितना भी धन दौलत हो, लेकिन उनके किए गए कर्मों के अनुसार ही वह पाने वाले लोक आधारित है। ज्ञानी ऊपर लोक पहुंचना ही नहीं, बल्कि वहां के महान ज्ञानी, ऋषियों, महात्माओं, योगियों के संगत को पाते हैं।

जिसके पास धन है उसके कर्मों के अनुसार अगला जन्म होता है। लेकिन जिसके पास ज्ञान हो उसे इच्छुक जन्म मिलेगा। ज्ञानी को अगला जन्म अपनी इच्छा के अनुसार मिलेगा। इसलिए ज्ञान प्राप्त करने से सब फायदा ही फायदा है।

महात्माओं ने और क्या कहा था कि, **'इस लोक की चीजों के मोह से हमें बार-बार अधोलोक में ले जाकर पैदा होना, जन्म-मृत्यु वाले विष रूपी चक्र में डालते हैं'।**

पृथ्वी को अधोलोक कहा, क्यों कि उसके ऊपर छह सूक्ष्म लोक है।

1.भुवर लोक, 2.सुवर लोक, 3.जना लोक, 4.महा लोक, 5.तपो लोक, 6. सत्य लोक।

इस भूलोक के वस्तुओं पर मोह होने के कारण इस अधो लोक में बार-बार जाते हैं आते हैं। इस लोक में पति-पत्नी, बच्चे, पोता पोती, धन दौलत, पैसा, सुख, अनेक है।

मनुष्य अपने पांच ज्ञानेंद्रिय से अनुभव करने वाले पर मोह रखता है। इस मोह में पढ़ कर खाने की चीजे, आंखों से देखने के सुंदर दृश्य, कानों से सुनने वाला संगीत, नाक से खुशबू, चमड़ी से स्पर्श सुख, इन सब से अनुभव करने के लिए आकर्षित होते हैं। इतने मोह होने के कारण मनुष्य को तृप्ति नहीं है। मोह पाने के लिए पैसा चाहिए। अपने पास जो धन है उससे पूरा नहीं कर पाता, इसलिए पाप करता है, गलतियां और पाप करने से बार-बार पृथ्वी पर आना पड़ता है।

पृथ्वी पर आने के बाद करने का काम क्या है? कि पृथ्वी पर ना आने का प्रयत्न करना चाहिए। जब तक वह प्रयत्न न करेगा, तब तक इस सांसारिक चीजों पर मोह से जन्म और मृत्यु के दुष्ट चक्र में बंदी हो जाते हैं। नहीं तो इन सांसारिक चीजों पर जितना मोह है उतना ज्यादा जन्म लेना पड़ता है।

इस सांसारिक वस्तुओं पर मोह जब छोड़ देता तब जन्म कम हो जाएगा।

जानवरों में किसी भी जानवर को देखने से भी उसमें होने वाला एक इंद्रिय की कमजोरी के कारण उनका नाश हो जाता है। लेकिन मनुष्य में पांच

ज्ञानेंद्रियों की कमजोरी है। सोचिए कि उनके कारण कितना अधोगति में पड़ेगा, देखिए ।

शब्द– संगीत —कान— हिरण ।

स्पर्श — मदा हाथी –चमडी– हाथी ।

रूप— देखना— आंखें— टिड्डी ।

रस— रुचि —जीभ— मछली ।

चंदन— गंध — नाक — जुगनू ।

टिड्डी :- दीपक की रोशनी से आकर्षित होकर दीपक में गिर जाती है और मर जाती है।

इसी प्रकार प्रत्येक प्राणी एक इंद्रिय के कमजोरी में से मारता है।

ऐसा पंच इंद्रियों होने वाला मनुष्य को इस सांसारिक चीजों से कितना मोह होगा? इसलिए आर्थिक स्थितियों, और बीमारियों के कारण नरक का अनुभव करता है।

देखिए जब फूल खिलता है तो उसके अंदर का शहद की लालच में जुगनू उस पर बैठ्कर रस इकट्ठा करता है। तब फूल मुरझाने के कारण, जुगनू बाहर न आ पाती और मर जाती है।

ऐसा इंद्रियों का मोह में रहने वाला जो न करने का काम करके जन्म और मृत्यु के दुष्ट चक्र में बंदी हो जाता है।

जिनको इंद्रिय मोह नहीं होता उनका सांसारिक चीजों पर मोह नहीं होता है। वह पाप कर्म नहीं करते, मुक्ति कर्म ही करते हैं।

इन इंद्रियों का मूल, मन है। जब तक मन में मैल है, तब तक मोह होते हैं, जब मन शुद्ध होता है, तब मोह नहीं होता।

घंटों तक 'श्वास पर ध्यास' ध्यान अभ्यास करने से, न करने वाले काम ना करके, करने वाला काम करते हैं। वह जन्म मृत्यु के चक्र से बाहर आ

जाते हैं।

मोह कम होने से खर्चा भी कम हो जाएगा, उस बचा हुआ धन को लोक कल्याण के लिए इस्तेमाल करते हैं। ऐसा खर्च करने से आने वाली पुण्य के कारण, जन्मों कम हो जाएगा। अजीब बात यह है कि पृथ्वी के आकर्षण शक्ति से भी इस सांसारिक चीजों पर होने वाले आकर्षण ज्यादा है। ऐसा आकर्षण जिस में होता है वह जन्म मृत्यु के विष चक्र में बंदी होकर दुखी हो जाते हैं।

महात्माओं का संदेश है कि 'जीवन के लिए जितना धन की आवश्यकता है उतना ही कमा लीजिए। इस दुनिया से जाते समय धन किसी काम का नहीं है, इतना ही नहीं, धन ईश्वर को पास में नहीं ला सकेगी। धन दौलत, संपदा ईश्वर को पाने के मार्ग में अवरोध है'।

जीने के लिए कुछ ज़रूरतें हैं। वह है रोटी, कपड़ा और मकान और साथी।

यह ज़रूरतें पूरा करने के लिए किसी को भी धन की आवश्यकता है। इसलिए जीने के लिए जितना पैसा चाहिए उतना कमाना चाहिए। पैसा करोड़ों करोड़ों नहीं चाहिए। कितने करोड़ हो किसी को तृप्ति नहीं है, कारण क्या है की इच्छाएं सबसे बड़ा बनना।

उसकी महत्वाकांक्षा है की सबसे महान महसूस करने की, दरअसल में और जरूरी नहीं है। क्यों कमाते हो पूछने से, कहते हैं कि खुद को बड़ा दिखाने के लिए।

समाज में एक आदत है।

1. जिसके पास पैसा हो उसकी गौरव करते हैं।
2. जिसके पास पैसा है उसकी कदर करना ।
3. जिसके पास पैसा नहीं उसको निम्न भाव से देखना ।
4. जिसके पास पैसा नहीं उसकी कदर नहीं करना ।

इसलिए पैसा होने से ही इज्जत और कदर मिलता है, ऐसा समझ कर

पूरी जिंदगी पैसे कमाने में ही खर्च करते हैं। लेकिन कुछ दिनों के बाद मरना ही है। लेकिन ऊपर जाने के बाद जिनके पास ज्ञान है, वही ऊपर लोक में जाते हैं। लेकिन पृथ्वी पर जिसके पास ज्यादा पैसा है, उसी को बड़ा मानते हैं। ऊपर लोकों में जिनके पास जितना ज्यादा ज्ञान हो, उसे उतना बड़ा मानते हैं। जब शरीर रहता है तो पैसों का सम्मान है, लेकिन जब शरीर ना होता है तब ज्ञान का ही सम्मान है, गौर से देखने पर पैसा अस्थिर है, आत्मज्ञान स्थिर है। और शाश्वत है। सदा के लिए बड़ा बनने के लिए ज्ञान चाहिए।

अगर किसी को यह समझ आए कि मैं इस पृथ्वी पर बहुत समय तक नहीं रहूँगा तो वह पैसों का महत्व नहीं देता। पत्री जी के परिचय कि बाद मैंने मालूम किया कि हम शरीर नहीं, आत्माएं हैं। आत्मा, जैसे हम, पृथ्वी पर कुछ ही समय तक रहेंगे, कुछ समय के बाद ऊपर के लोकों में जाएंगे। इसलिए इधर सदा के लिए नहीं रहेंगे, क्योंकि जो स्थिर और शाश्वत है उसे कमा रहे हैं।

इतना ही नहीं जान लिया कि सिर्फ ज्ञान ही हमें महान बनाती है। तब पैसा कमाना छोड़कर ज्ञान कमाना शुरू करते हैं। और क्या समझ आया कि पृथ्वी पर होने वाला महानता, महानता नहीं है। जान लिया कि ऊपर लोकों में होने वाला महानता ही असली महानता है।

और क्या जान लिया कि पैसों के पीछे पड़ने पर पैसा कमा नहीं सकते, लेकिन ज्ञान के पीछे पढ़ने से ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। इसका कारण पैसे कमाने के लिए योग्यता होनी चाहिए, अधिक परिश्रम करने से, या ना करने से नहीं आएगा।

यह जान लिए इतना ही नहीं ज्ञान को श्रद्धा द्वारा कितना भी क्यों नहीं कमा सकते हैं । कृषि का मतलब श्रद्धा। इसलिए श्री कृष्ण जी ने कहा कि 'श्रद्धावान लभते ज्ञानम'।

किसी का भी लक्ष्य यही है कि ईश्वर को प्राप्त करना। ईश्वर को प्राप्त करने के लिए जहां ईश्वर लोक है वहां पहुंचना है। वही सत्य लोक है। तपोलोक में जाने से ईश्वर को पाता नहीं है, सत्य लोक में पहुंचने से ही समझो कि ईश्वर के पास पहुंचा। इसलिए करोड़ होने वाले से, थोड़ा सा ज्ञान प्राप्त करने वाला ही महान है।

आत्मज्ञानी का चाल चलन कैसे होती है।

1. आत्मज्ञानी समझते हैं कि आध्यात्मिक सफर में लक्ष्य होते हैं।
2. आत्मज्ञानी सामान्य लोग और महान लोगों से सीखता रहता है।
3. आत्मज्ञानी आत्मा की बातों के अलावा कुछ भी नहीं बोलना या उल्लेख नहीं करता है।
4. जिनको आत्मज्ञान मालूम हो उसी के संगति में रहता है, दूसरी चीजों के बारे में बात नहीं करता है।
5. आत्मा से संबंधित आध्यात्मिक किताबें पढ़ता है, और जानने की कोशिश करता है।
6. जान लेता है कि जितनी ज्यादा किताबें पढ़ता है, उतना ज्यादा ज्ञान प्राप्त करते हैं।
7. महान लोगों को देखने से नहीं, उनके संदेश सुनने से, उनकी किताबें पढ़ने से ही, उनका ज्ञान अवगाहन में आएगी।
8. इतना ही नहीं, जानता है कि ज्ञान पाने वाले का संगत में रहने से, ऐसी किताबें पढ़ने वाले के संगत में रहने से, ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।
9. आत्मज्ञानी समझते हैं कि जो जरूरत नहीं वह हमारे पास नहीं आएगा।
10. आत्मज्ञानी जानते हैं कि हम स्वयं ही निर्धारित करके ही आते हैं।
11. आत्मज्ञानी को मालूम है कि कहीं जाने की जरूरत नहीं है। कहीं भी जाओ, हमें ध्यान करना चाहिए और ज्ञान प्राप्त करना है। हमें जो करना है उसे करने के लिए, जो पाना है उसे पाने के लिए, हमारा घर ही अनुकूल जगह है, यह बात जान लेता है।
12. आत्मज्ञानी समझता है कि जो किया है, वह करने के लिए जन्म नहीं होती, जो ना करते, वह करने के लिए नया जन्म चाहिए।
13. आत्मज्ञानी जान लिया कि जिसका अनुभवों है, उससे अनुभवों नहीं होने वाला, ज्यादा महान है।

श्री तटवर्ती वीरा राघवराव का हिन्दी किताब

1) आत्म शास्त्र ।..................................Rs.200/-
2) ध्यान विद्या ।..................................Rs.160/-
3) भगवद् गीता का सार ।......................Rs.160/-
4) एक और जन्म ।..............................Rs.160/-
5) सत्य मार्ग ।......................................Rs.160/-
6) मरने से पहले मरना है।........................Rs.130/-
7) 'गाइडिंग' ध्यान क्यों नही ? Rs.120/-
8) भगवान कौन हैं। Rs.120/-
9) कर्म सिद्धांत ।...................................Rs.120/-
10) विज्ञान का अर्थ - निहितार्थ Rs.120/-
11) ब्रह्म ज्ञान।..Rs.100/-
12) यह जीवन क्यों हैं ? Rs.100/-
13) मेहर बाबा का संदेश। Rs.100/-
14) मरने के बाद, साथ में आने वाले विषयों ।.. Rs.80/-
15) भागवत के दृश्यों का अर्थ..................... Rs.80/-
16) ज्ञान माला Rs.70/-
17) श्री दत्तात्रेय जी का 24 गुरुओं। Rs.70/-
18) दुख निवारण का मार्ग Rs.75/-
19) आर्थिक स्थिति बढ़ाना है तो ? Rs.60/-
20) निर्वाण मार्ग Rs.60/-
21) महात्माओं के संदेशों।............................ Rs.50/-
22) सत्य Rs.50/-
23) क्या हम इस लोक के वासी हैं या परलोक के वासी हैं? Rs.50/-
24) गुरु को पहचानना कैसे ? Rs.50/-

For Books Please Contact :

TATAVARTHI VEERA RAGHAVARAO

BHIMAVARAM. Ph: 94403 09812

सारे महान योगी लोग ने बहुत तकलीफ उठया। बहुत अभ्यास कर के, सत्य के बारे में जान लिया, मनुष्यों के दुख का कारण जान लिया, दुख से बाहर आने का मार्ग मालूम किया, यही सब को सिखाया।

▲ मनुष्य के गुण आधारित ही उनके करने का काम होता है, और उनका बातों भी निर्भर है, उनका किया हुआ सेवाओं निर्भर है।

▲ कोई भी मनुष्य को अपने हाथों से धर्म मार्ग में कमाकर, खुद खाकर और उसने से कुछ दूसरों को बांटना चाहिए, ऐसे लोग ही ईश्वर को पा सकते हैं।

▲ ईश्वर को पाने के लिए कोई भी प्राणी को पीड़ित नहीं करना चाहिए। जीव हिंसा नहीं करना चाहिए, किसी भी प्राणी को हानि नहीं पहुंचनी चाहिए।

▲ किसी से कुछ भी अपेक्षा नहीं करना चाहिए, सब की सेवा करना चाहिए, और सबका सहकार करना चाहिए।

▲ इस सांसारिक चीजों पर मोह, हमें बार-बार इस निम्न लोक में ले जाकर, जन्म मृत्यु का विष चक्र मे लाती है।

- ब्रह्मर्षि तटवर्ती वीर राघवराव

Rs.50/-